प्रात: क्लास ओम शान्ति। 21-1-67

(बाप-दादा एक फूल-गुलाब का लाकर शीव की सदली पर रखते है) बच्चो के लिये यह फूल रखा है। [illegible] ही जाता है ज्ञान गुलाब। फूल तो बहुत है नां। यह सारी बाते रूहानी बाप रूहानी बच्चो को स[illegible] [illegible] दुनियां के मनुष्य नही जानते है। तुम अभी कलयुगी दुनियां के नही हो। तुम संगम युगी हो। पुरुषो[illegible] [illegible] बनने वाले हो। पुरुषोत्तम ऐसे फूल बनने हो। यह तो है ही फूलो का बगीचा। फूल बनते है जरूर [illegible] [illegible] सजोय रखाकर फूल बनते है। तो उनको फूल भी कहेंगे। अभी तुम यहां पर बैठे हो नर से नारायण [illegible] [illegible] लिये और सच्ची सत्यनारायण की कथा सुनने के लिये। यह वो ही गीता की कथा है। आगे कब [illegible] [illegible] थी। मनुष्य तो कहेंगे कि लाखो वर्ष हुये है। 5000 वर्ष के बदले मे लाखो वर्ष कह देते है। पत्थर बुधी [illegible] [illegible] है नां। क्योंकि गीता का [illegible] [illegible] योग [illegible] आया, इसको हुआ 5000 वर्ष। और अगर उसके बदले [illegible] [illegible] [illegible] तो उनको क्या [illegible] नम्बरवन [illegible]। यह भी है ड्रामा। समझाया [illegible] [illegible] कि ड्रामा के प्लान अनुसार [illegible] [illegible] दुनियां पत्थर बुधी बनी पडी है। इसको ही कहा [illegible] [illegible] गीता ऐप्पीसोड। (पुरुषोत्तम संगम युग ही गीता का युग है। गीता के युग को ही पुरुषोत्तम संगम युग [illegible] [illegible]) क्योंकि [illegible] पुरानी दुनियां भी है तो नई दुनियां भी है। लाखो वर्षो की तो बात ही [illegible] [illegible] है। यह तो बिलकुल [illegible] [illegible] [illegible] पुरानी और नई दुनियां का भी हिसाब [illegible] [illegible] भी सत त्रेता, द्वापुर कलयुग पास हो गये। उनको कितना समय हुआ। मनुष्यो की बुधी मे [illegible] [illegible] [illegible] बुधियों मे [illegible] [illegible] 5000 वर्ष का है। [illegible] [illegible] गीता सुनाई राजयोग [illegible] सिखाया। गीता मे [illegible] राजयोग। नर से नारायण बनना [illegible] [illegible] [illegible] 5000 वर्ष [illegible] [illegible] गीता के ऐप्पीसोड [illegible] [illegible] झूठ हो गया। किसीको भी झूठ के लिये समझाया जाता है तो कितनी गुरुगुर करते है। गुरुगुर [illegible] करते है नां। मनुष्य नही करते है। परन्तु आज कल तो मनुष्यो मे पांच विकार होने कारण [illegible] बन्दर से भी बदतराये जाते है। इसूरत मनुष्यो की है सीरत बन्दर की है। सतयुग मे जब इन ल-न का राज्य [illegible] ऐसे नही कहेंगें। इस समय ही कहा जाता है। तुम अब अच्छी तरह से जानते हो। कई तो बिलकुल ही सुधरते नही है। भगवान आया है तो भी सुधरते नही है। (बन्दर से मन्दिर नही बनते है) परन्तु लगते [illegible] नही है। तुम जानते हो कि ढेर के ढेर है जिनकी कि विनाश काले विपरीत बुधी है। बाप को ही नही जानते [illegible] यह भी समय है सभी को हिसाब किताब भी चुक्तु करना है। सजेय भी खानी है। पद भ्रष्ट होते है। राजधानी स्थापना होरही है नां तो उसमे तो पदो की भी वारायटी है। एक जैसे तो सभी बन नही स[illegible] तुम सबको फूल नही बना सकते हो। जो फूल बनेंगे वो ही सतयुग मे आवेंगे। जो कुछ सुनते ही नही है तो पद भी क्या पावेंगे। सभी तो देवता बनेंगे नही। कोई तो अच्छी रीती ज्ञान आघर लेते है। कोई तो कुछ भी पढ़ते ही नही है। उस पढाई मे भी ऐसा ही होता है। कोई तो पढ़ कर आई, सी, एस, बन जाते है। कोई तो पढते ही नही है। बाबा ने समझाया था कि चकराता मे टीचर पढ़ाते थे परन्तु खेती-बाडी करने वाले बिलकुल पढ़ते ही नही थे। बोलते थे कि हमको तो घास काटना ही पसंद है। पहले [illegible] अपने पेट का प्रबन्ध तो करें। कोई तो कितना पढ़ते है। फर्क तो होता है नां पढाई मे? धन्धे आदि मे भी लाखो का करोडो का फर्क हो जाता है। नौकरी मे इतना नही होता है। कोई-2 तो नौकरी मे भी बहु[illegible] है। वकील लोग तो एक-2 केस का भी कितना-2 ले लेते है। धनवान तो होते है नां। सोमनाथ का मन्दिर जिसने बनाया होगा वो कितना धनवान होगा। वाम मार्ग मे जब गये है तो उस समय भी सोने के [illegible] [illegible] अब तो कुछ भी नही है। हो सकता है कि चमडे के भी पैसे बन जाये। तो बाबा फर्क समझाते

को अपनी पढाई का कितना नशा रहना चाहिये। नम्बरवार तो है ही है। बाप भी माली फूलों का गुलदस्ता बनाते हैं नां। कोई तो मिक्सचर फूलों को बनाते है। कोई फिर सिर्फ गुलाब के ही फूलों को बनाते है। भिन्न-भिन्न प्रकार के नमूने होते है। अब उन में ज्ञान तो कुछ है नहीं। तुम अभी गुलदस्ता बनाओ तो टंगर आद के नहीं, ज्योत आद के फूल थोडेई उसमे होंगे। जिनमे ज्ञान होगा वो अच्छे-2 खुशबूदार फूल ले आवेंगे। जो फूल भी फूल होंगे उनको फूलों का शौक होगा। हम ऐसा फूल बनते है। बाप बताते है नां कि मै बगीचे में जाता हूं तो भेंट करता हूं। यह टंगर है। इसमे कोई भी सुगन्ध नही है। बदबू ही बदबू है। अज्ञान बदबू फैलाते है। खुशी से समझा जाता है नां। बदबू वाले फूल को तो देखना भी नही चाहेंगे। सुगन्ध वाले फूल की तरफ ही आंखे जाती है। तुम समझते हो कि फूलों का बगीचा तो बनना ही है। सतयुग में सभी फूल ही होते है। जो फारखती देकर छोड जाते है तो वो क्या बनेंगे। चंडाल भी तो चाहिये ही। बडे-2 धनवानों की तो शमशाने भी अलग ही होती है। मर्तबे मे फर्क तो बहुत ही होता है नां। कहीं प्रेसीडण्ट कहां पर फिर गटर साफ करने वाला। फर्क तो देखो। है तो दोनो ही मनुष्य। तो वहाँ भी तो मर्तबे मे फर्क तो होगा नां। सभी फूल तो नही बन जावेंगे। जैसे यहां पर है वैसे ही वहां पर भी होता है। सिर्फ वहां पर दुःख नही होता है क्यो कि रावण का राज्य ही नही है। अच्छे बच्चों को देख कर खुशी होती है कि यह तो अच्छा बच्चा है। इनका अन्दर साफ नही है। पता तो पडता ही है नां। ऐसे तो बहुत होंगे जो कि अन्दर मे तो एक बाहर मे दूसरी रखते होंगे। एक कहानी भी है कि अमृत पीकर फिर बाहर में औरों को तंग करते थे। वो भी इसी समय होता है। इतनी दण्ड कथाये बनाई है। देखने में भी आता है कि एक तरफ तो अमृत पीते रहते है। दूसरे भी बैठे है परन्तु उनको तो जरा भी धारना नही होती है। बाहर में उठे तो फिर से वो ही अवगुण-अवगुण करते रहेंगे। तो अन्दर बाहर से साफ थोडेई ठहरे। फूल तो हमेशा सुगन्धी ही देते रहते है नां। बाप कहते है कि बच्चे मुरदे से जिंदा बन निकलो। परन्तु सुधरते नही हैं। भगवान भी आये तो भी कभी नही सुधरेंगे। अपना कल्याण नही करेंगे। अब भगवान के भी ऊपर तो कोई है नही। समझाया जाता है कि ड्रामा की भावी ऐसी है। भगवान भी क्या कर सकते है। तुम बच्चे तो यहाँ पुरुषार्थ ही हो ऐसा फूल बनने के लिये। कांटो से फूल बनना है। बाप कहते है कि कांटा मत बनो। कांटा कहो या काम कटारी कहो। देवियों को तो तलवार छुरी आद देते है। परन्तु देवियों को कोई तलवार छुरी आद होती नही है। इस समय के मनुष्य सभी एक दो का काम कटारी से खून करते ही रहते है। बाप कहते है कि यह नही होना चाहिये। बाकी शास्त्रो मे तो कथाये बहुत लिख दी है। मैगजीन मे भी किस्म-किस्म की कहानियाँ निकालते है। है तो कुछ भी वैसा नही। दो भुजाओं के सिवाय आठ दस भुजाओं वाली कोई देवी है ही नही। यह लक्ष्मी नारायण भी तो मनुष्य ही है नां दो भुजाओं वाले। यह जो खुदही चित्र बनाने वालो ने इतनी भुजाये दे दी है। अब तुम भी समझते हो कि आगे तो हम भी मन्दिर आद मे जाकर पूजा करते थे कुछ भी नही था। अब बाप ने सब समझाया है। ज्ञान के अस्त्र-शस्त्र सब तुम्हारे पास है। परन्तु यह शरीर तो पतित है नां। स्वदर्शन चक्र भी तुम ब्राहमणो का ही है। चित्रो मे तो फिर विष्णु को अलंकार दे दिये है। यह अभी समझते है। तोते मिसल सिर्फ याद करते है। हड्डी याद नही रहता है। क्योंकि जंगली तोते है। इनिस पर्क्स सुधरता ही नही है। कोई अच्छे रास्ते पर चलते है तो उनका भी रास्ता छुडवा देते है। याँ तो पार्टीवटी ही ऐसी करेंगे कि वो उस रास्ते से छूट जावे। संग पर भी सारा मदार है। वहाँ पर ईश्वरीय कुल के संग मे तो तुम कितने सुधरते जाते हो। वहाँ चिन्मयानन्द का संग शंकराचार्य का संग। फलाने का संग वो कहाँ ले जाते है। वो है ही भक्ति तो जरूर नीचे ही जावेंगे। यह तो डाकुओं से भी बहुत बडे बडे डाकू है गुप्त। क्या डाका लगाते है? सबसे बडे से बडा डाका है परमपिता परमात्मा से बेमुख करके नास्तिक बना देना।

21-1-67 17 3

...लिये ही गाया जाता है विनाश काले विप्रीत बुधी। प्रीत बुधी रखना तो दुनियां में कोई भी जानते न... जानते कुछ भी नही तो ऐसे ही जाकर उस पर लोटी डाले तो क्या फायदा? शिवलिंग की पुजा करते... वो तो पत्थर ही है नां। नदियों से निकलते है। पहाडो से पानी गिरता है। तोउसमें पत्थर घिस-2 क... बन जाते है। कई पत्थरो के अन्दर से तो सोने के निशान भी निकलते है तो वो फिर पत्थर बहुत महँगें बिकते है। है तो पथ्थर ही नां। उनकी ही पुजा बैठ करते है। जानते थोडेई है कि यह शिव कौन है... किसीकी बुध्दी मे होगा कि वो बिन्दी है। बिन्दी की पुजा तो हो ही नही सकती है। वो तो ज्ञान देने वाला है। उनको तो कहा ही जाता है कि ज्ञान, सुख, शान्ती का सागर है। शिव बाबा की महिमा ... चित्र मे लिखी हुई हो। परन्तु सो तो बहुत ही है। तो मुख्य-2 महिमा लिखनी चाहिये। तुम तो बाप की महिमा को जानते हो नां। यह भी बाप ने समझाया था है कि शंकराचार्य फिर भी पुजारी है। यह हमेशा ही लिखते रहो कि पुजारी पुज्य हो नही सकता है। पुज्य पुजारी हो नही सकता। सत त्रेता नई दुनियां में पुज्य ही होते है। पुजारी कोई होता ही नही है। द्वापुर कलयुग की पुरानी दुनियां मे फिर पुज्य कोई भी हो ही नही सकता है। शंकराचार्य को पुज्य मानना ही मिथ्या है कितने तो उनके फलोवर्स है जो
****
उनके चरणो मे जाकर पडते है। कहा है कि तुम भी अखबार मे निकालो। मैगजीन्स तो सिर्फ जो मंगवाते है उनके ही पास जाती है। इनसे पहले तो जो मैगजीन निकली थी कि भगवान यह कहते है सो मनुष्य कहते है वो ही मैगजीन इन श्री-2 108 जगत गुरुओ को भी भेज देनी चाहिये। मुफ्तमे ही। खर्चा हर्जा नही है। सौवो सो रुप्या खर्चा होगा सभी के नाम पर भेज देनी चाहिये। बाप कहते है कि सन्यासी लोग तो कदाचित भी राजयोग सिखा नही सक्ते है। उन सभी को मैगजीनस भेज देनी चाहिये। जो ... वो भेज सकते है कनट्रास्ट वाली मैगजीन। उसने कहा है कि यह लोग ग्लानी करते है। परन्तु हम तो महिमा करते है। हम जानते है तो महिमा करते है। वो तो जानते ही नही है तो महिमा ही क्या। हम कृष्ण की कितनी महिमा करते है। श्रीकृष्ण तो विश्व का फर्स्ट प्रिन्स है। वो फिर ज्ञान का सागर नही हो सकता है नां। कितनी पुआईन्टस है समझाने की। बहुत समझते है कि हमारी बुधी मे पुआईन्टस समय पर याद आ जावेगी। बाप कहते है कि चलन भी तो चाहिये नां। चार्ट रखने की बहुत जरूरत। अभी नही लिखते है तो पिछाडी मे ही सही मगर लिखेंगें जरुर। लिखने बिना खाता रखते बिना काम कैसे होगा? व्यापारी खाता ही नही लिखे तो नफे नुकसान का पता ही नही पडे। आज नही ... है तो आगे चल कर समझ आवेगी आपही रखेंगें। भाषण भी करना है। तो पहले टापिक पर लिखना चाहिये फिर उसको सुधरना चाहिये। फिर भी बाद में याद जरुर आवेगा फलानी पुआईन्ट रह गई। बैरिस्टर लोग पुआईन्टस को ध्यान मे रखते है नां। जिस को भी सभी पुआईन्टस याद थोडेई रहती है। तुम बच्चे ... हो तुमको इतनी खुशी नही है जितनी कि होनी चाहिये। रुपैये मे से एक आना भी नही है। खुशी होगी ही पिछाडी में। पास हो जावेंगें फिर मिरूआ मौत मलूको का शिकार। तुम खुशी मे नाचते रहेंगे। शास्त्रों में बाते कितनी लम्बी चौडी लिखदी है। अदवेत रामायण आद कुछ भी नही है। अदवेत तो तुम बनते हो नां। अदवेत शिक्षा या विदया रूहानी बाप के बिना कोई भी सिखा नही सकते है। अदवेत देवता बनने का ज्ञान। वो तो सिर्फ तुम्ही दे सकते हो। अदवेत माना ही देवता। दवेत माना दैत्य। तो सच है झुठ। झुठी माया... गायन है नां। बाप का तो नाम ही है ट्रुथ। सत्य बाप ही आकर कथा सुनाते है। तुम बच्चे एक ही जन्म में सच्ची कथा सुन कर नर से नारायण बनते हो। तुम अभी ... से परे जाते रहो। तो आवाज भी बहुत कम होना चाहिये। जैसा सूक्ष्म वतन। मनायको का आवाज ... सुनने मे आता है। अभी तुम ब्राह्मण मैजारटी मे हो। जब मैजारटी बनेगी तब तुम्हारे शोर की ...